The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 2 | February 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शालेय वातावरण पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन

चंकी राज वर्मा
स्कूल ऑफ एजुकेशन, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
Email: - chankirajv@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted on: 22-02-2025

Published on: 14-03-2025

Keywords:

छात्रावासी] गैर-छात्रावासी] मानसिक स्वास्थ्य] शालेय वातावरण] बौद्धिक विकास।

ABSTRACT

विद्यालयों में विद्यार्थियों को अनेक प्रकार के नियमों का समय के अनुसार पालन करना अनिवार्य होता है। जैसे स्कूल समय पर पहुंचना शिक्षकों की आज्ञा मानना सबसे मित्र पूर्ण व्यवहार एवं सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना एवं शांति के साथ चलना फिरना समय पर खेलकूद एवं अन्य कार्यक्रमों में भाग लेना आदि इन सभी बातों का पालन करना विद्यालयों की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य एवं विद्यार्थियों की समस्त शक्तियों का विकास करते हुए उसका सर्वांगीण विकास करना होता है। शिक्षा की परिभाषा व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है और जीवन के प्रायः प्रत्येक अनुभव से उसके ज्ञान भंडार में वृद्धि होती है शिक्षा से मेरा भी प्रायः बालक था मनुष्य में निहित शारीरिक] मानसिक एवं आत्मिक श्रेष्ठ शक्तियों का सर्वांगीण विकास है। सर्वोच्च शिक्षा वही है जो संपूर्ण दृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है। शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर] मन तथा आत्मा की सर्वोच्च सर्वांगीण एवं उत्कृष्ट विकास से है। मनुष्य के अंदर को संपूर्ण रूप से जानना या अभिव्यक्त करना ही शिक्षा कहलाती है। शिक्षा मानव की संपूर्ण शक्तियों का प्रगतिशील सामंजस्य पूर्ण और प्राकृतिक विकास से होता है ।शिक्षा का लक्ष्य मानसिक एवं बौद्धिक विकास को शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा ही सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन बालक के संवेगात्मक विकास को सुनिश्चित करना भी विद्यालय का उद्देश्य होना चाहिए लेकिन इसके लिए विद्यालय को अपनी पद्धति का नियोजन करें जिससे बालक का शिक्षा में परिवार के साथ भावनात्मक रूप से जोड़कर अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करें।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15030116

प्रस्तावना - विद्यालय के वातावरण को आकर्षक एवं सुदृढ़ बनाने के लिए प्रमुख व्यक्ति की आवश्यकता होती है। लेकिन वातावरण के दो भाग पढ़ सकते हैं जिसमें भौतिक और मनोवैज्ञानिक है आप देखते हैं कि विद्यालय का भवन भले ही सादा हो उसे आकर्षक बनाया जाता बनाया जा सकता है। यदि विद्यालय बनवाने में बहुत पैसे खर्च होता है इसमें अध्यापकों] विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की सहायता नहीं मिले तो भी न्यूनतम अनिवार्य आवश्यकता जुटाना कठिन नहीं होगा हमको बस विद्यालय में यही चाहिए कि स्थान को स्वच्छ और व्यवस्थित रखने में सभी के सहयोग की आवश्यकता होती है। जिसे सुचारू ढंग से चला सके जिससे विद्यालय का सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण भी महत्वपूर्ण होता है।

बालक अपने जन्म से मरते दम तक अनेक समस्याओं का सामना करता है। भारत एक विकासशील देश है जिसमें प्रत्येक क्षेत्र में लगभग संसाधनों की अत्यंत कमी होती है। जो व्यक्ति को अपने जीवन काल में आवश्यकताओं की पूर्ति करने में कठिनाई महसूस करती है। कठिनाई उसके व्यक्तिगत] सांवेगिक एवं सामाजिक कारणों से व्यक्ति में दुश्चिंता उत्पन्न करती है। फ्रायड ने किशोरावस्था के काल को आंतरिक संघर्ष मनोवैज्ञानिक समस्या एवं अनिश्चित व्यवहार का बताया है। किशोर एक तरफ अत्यंत अहंकारी देष में अपने आप को केंद्र में रखने वाले होते हैं वहीं दूसरी तरफ आत्म बलिदान तथा समर्पण करने की क्षमता रखते हैं।

भारत में शिक्षा - भारतीय शिक्षा का इतिहास को हम देखें तो भारतीय समाज के विकास एवं छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी बालकों के मानसिक स्वास्थ्य] शैक्षिक दुश्चिंता एवं शाला के वातावरण के अनुसार परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं। जिससे उनकी शिक्षा में हम निरंतर विकासशील देखने को मिलता है। प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था। इसी समय भारत की शिक्षा व्यवस्था का ह्रास हुआ क्योंकि विदेशियों के द्वारा भारत की शिक्षा व्यवस्था को जिस अनुपात से विकसित करना चाहिए उस अनुपात से विकसित नहीं हुआ जिससे विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य का सही से विकास नहीं हो पाई। जिससे विद्यार्थियों को शैक्षिक दुश्चिंता का शिकार होते गए और जिसके कारण शाला का वातावरण में भी प्रभाव देखा गया।

अध्ययन की आवश्यकता - छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी विद्यालय का परिवेश और छात्राओं की उपलब्धियों में अत्यधिक सुस्पष्ट सहसंबंध होता है। विद्यालय वातावरण से विद्यार्थी की बहुत कुछ अपेक्षाएं होती है। उन्हीं सभी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए भरसक प्रयास करता है। विद्यार्थियों को प्रेरक एवं मुक्त परिवेश छात्रों के विचारों एवं अभिव्यक्ति की पूरी स्वतंत्रता प्रदान करता है। यह छात्रों की सकारात्मक दृष्टिकोण तथा कार्य निष्पादन से सभी पक्षों में पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित होती है।

शाला का वातावरण शाला के स्तरों को उन्नत करने के लिए एक महत्वपूर्ण निवेश है कक्षा के कमरे में शिक्षण अधिगम के प्रभावकारी केंद्र बने उसके लिए विद्यालयों की सहायता अवश्य की जानी चाहिए। जिससे शालाओं में मुक्त परिवेश दे सके। जिससे अध्यापक एकत्रित होकर बिना शिकायत के अच्छा काम कर सकें। अपने कार्य में संतुष्टि होती रही जिससे स्वतः पर्याप्त मात्रा में अभिप्रेरित होते रहे।

अध्ययन का औचित्य - छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक दुष्चिंता से शालाओं के वातावरण से विद्यार्थियों को सीखने में प्रभाव डाल सकता है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में शालाओं का महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसमें विद्यार्थियों के मानवीय गुणों का विकास करना और विद्यार्थियों को सुयोग्य]

सुचरित्र नागरिक बनाने में चुनाव का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जिससे विद्यार्थी का मानसिक स्वास्थ्य पर भी इतना प्रभाव पड़ता है। शाला का वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। जिससे शालाओं के अध्यापक का व्यक्तित्व विकास एवं पाठ्य सहगामी क्रियाएं शिक्षण विधियों का प्रयोग एवं विद्यालय का सामान्य वातावरण से बालकों के शैक्षिक विषमता को दूर भी किया जा सकता है। यह सब बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है शाला ही एक ऐसा स्थान है जहां बालकों का मानसिक विकास सही तरीके से हो पाता है। इसीलिए कहा गया है कि बालकों में शैक्षिक दुश्चिंता आने पर भी शिक्षा के द्वारा बालकों का सर्वांगीण विकास करना आवश्यक होता है। शाला में आप देखेंगे कि शिक्षक तथा वहां का वातावरण सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है लेकिन शाला एक ऐसा स्थान है जो विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर विद्यार्थी के विकास में अपना सहयोग दे सकते हैं।

अध्ययन का महत्व - शालेय वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। छात्रावासी गैर-छात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सहानुभूति] प्रेम] सद्भावना और सहयोग से ओतप्रोत होता है। विद्यार्थियों में जाति-भेद] ऊंच-नीच की भावना नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक बालक चाहे वह छात्रावासी हो या गैर-छात्रावासी शालाओं में अपने आप को सुरक्षित अनुभव करते हैं। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के समूह भावना का विकास करें जिससे विद्यार्थियों में अपने शैक्षिक परिणामों एवं अपने भविष्य के प्रति विद्यार्थियों में चिंता होती रहती है। आज के समय के अनुसार समाज में अपने गुणों तथा योग्यताओं के अनुरूप विषयों का चयन करने के लिए अनेक अवसर प्रदान किए जाते हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों में निर्णय लेने की गतिशील प्रक्रिया को शिक्षक एवं अभिभावक को समझना होगा। जिसे विद्यार्थी अपने विवेकपूर्ण ढंग से अपने विषय के बारे में सही एवं उपयुक्त तरीके से अध्ययन करते हुए उपयुक्त शैक्षिक परिणामों को प्राप्त करें। इस स्तर पर प्राप्त शैक्षिक स्तर पर उसके शैक्षिक परिणामों में प्रभाव डालेगा। जिससे विद्यार्थी का शैक्षिक दुश्चिंता से व्यक्तित्व का समुचित विकास संभव नहीं है इसके लिए मानसिक रूप से स्वस्थ बालक सामाजिक परिवारिक संवेगात्मक तथा व्यवसायिक जीवन में समायोजन करने में सफल होता है। यदि कोई बालक मानसिक द्वंद-चिंता और मनोग्रंथियों से पीड़ित हो तो उसके लिए समायोजन करना संभव नहीं समायोजन का अभाव उसके व्यक्तित्व को विघटित कर सकता है अतः व्यक्तित्व का संगठन मानसिक स्वास्थ्य के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

अध्ययन की सार्थकता - किसी भी छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय का वातावरण एवं वहां के शिक्षा का स्वरूप बालक की योग्यता तथा क्षमता को प्रभावित करती है। छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी दोनों विद्यालय में भिन्न-भिन्न आदत के बालक भिन्न-भिन्न रुचि और दृष्टिकोण रखने वाले विद्यार्थी आते हैं। जिस तरह से बालक का शारीरिक विकास होता है लेकिन बाहरी वातावरण के संपर्क में आने से छात्रावासी विद्यार्थी के शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके परिवर्तन से शाला का वातावरण तथा बाहरी वातावरण का प्रमुख योगदान होता है। अभी हम देखें तो सभी स्तरों में स्पर्धा का माहौल है विद्यार्थियों में भी हमें यह देखने को मिलता है। इस स्पर्धा के कारण बाकी अपने सहपाठियों से पीछे रहना पसंद नहीं करते और साथ ही आगे अच्छी संस्था में प्रवेश के लिए प्रयास करते हैं। जिसमें उनको रोजगार उपलब्ध हो सके लेकिन कई विद्यार्थियों को रोजगार नहीं मिल पाने से शैक्षिक रूप से चिंतित रहते हैं। अच्छा पढ़ाई लिखाई और परिणाम अच्छा प्राप्त करने से शाला का वातावरण की उपस्थिति अनिवार्य है। सभी संबंधित शोध अध्ययनों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि

प्रस्तावित शोध समस्या पर छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी बालकों की मानसिक स्वास्थ्य शैक्षिक दुश्चिंता पर शालेय वातावरण का प्रभाव एवं शोध अध्ययन का अभाव पाया गया। इस शोध में इसके अभाव की पूर्ति का माध्यम बना है प्रस्तुत अध्ययन से यह ज्ञात होगा कि शाला का वातावरण मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक दुश्चिंता को प्रभावित करता है। इसके परिणाम से छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी विद्यार्थियों]शिक्षकों]अभिभावकों]प्रशासकों एवं शैक्षिक नीति निर्धारणों के मार्गदर्शन हेतु लाभप्रद होंगे। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि हेतु प्रयास किए जा सकेंगे तथा शालेय वातावरण इस प्रकार निर्मित किए जा सकेंगे जिससे कि विद्यार्थियों में शैक्षिक क्षमता कम हो सके।

अध्ययन का उद्देश्य:-

1- छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शालेय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

2- छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की मानसिक स्वास्थ्य एवं शालेय वातावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

3- छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की मानसिक स्वास्थ्य एवं लिंग एवं परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

4- छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शालेय वातावरण एवं लिंग एवं परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना:-

H_1. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की मानसिक स्वास्थ्य एवं शालेय वातावरण के मध्य संबंध का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_2. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थीयों की मानसिक स्वास्थ्य एवं शालेय वातावरण के मध्य संबंध का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_3. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थीयों की मानसिक स्वास्थ्य एवं शालेय वातावरण के मध्य संबंध का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की विधि -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी के द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है। जिसके अंतर्गत संबंधित चरो व घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है। जिससे प्राप्त परिणाम से वैज्ञानिक निष्कर्ष] नियम तथा सिद्धांतों की रचना] खोज व उसकी पुष्टि की जाती है।

न्यादर्श -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में रायपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी उच्चतर मा. विद्यालय में से 600 न्यादर्ष के रूप में लिया गया है।

उपकरण -

क्र.	उपकरण का नाम	चर	निर्माणकर्ता का नाम
1	शालेय वातावरण मापनी	शालेय वातावरण	डॉ.करूणा शंकर मिश्रा
2	मानसिक स्वास्थ्य बैटरी	मानसिक स्वास्थ्य	प्रोअरूण कुमार सिंग ., डॉ.अल्पना सेन गुप्ता

परिकल्पनों का सत्यापन -

परिकल्पना क्रमांक **H_1** छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक सहसंबंध उनके शालेय वातावरण के प्रभाव के साथ नहीं पाया जायेगा । इस परिकल्पना के सत्यापन के लिये आंकड़ों का विश्लेषण तालिका क्रमांक **1** में दिया गया है । तालिका क्रमांक **1** में छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शालेय वातावरण के प्रभाव के मध्य सहसंबंध गुणांक को प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका क्रमांक - **1**

छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शालेय वातावरण के प्रभाव के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'
छात्रावासी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य	600	.157**
शालेय वातावरण के प्रभाव	600	

r(df=398) 0.148 at .01 level

.01 के सार्थकता स्तर पर

तालिका क्रमांक 1 के अनुसार छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शालेय वातावरण के प्रभाव के मध्य सहसंबंध गुणांक r=.157 है । गणना किये गये सहसंबंध गुणांक का मान भी सारणी में दिये गये मान r(df=398) = 0.148 at .01 level से अधिक है । प्राप्त परिणामों के अनुसार छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक शालेय वातावरण के प्रभाव प्राप्तांकों (प्रतिशत) में वृद्धि होने पर उनके मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण में अंकों में वृद्धि हो रही है । अतः छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी

उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध उनके शालेय वातावरण के प्रभाव के साथ है । छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शालेय वातावरण के प्रभाव के मध्य सहसंबंध को आरेख क्रमांक 1 में भी दर्शाया गया है ।

आरेख क्रमांक - 1

छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शालेय वातावरण के प्रभाव के मध्य सहसंबंध गुणांक का प्रकीर्ण आरेख

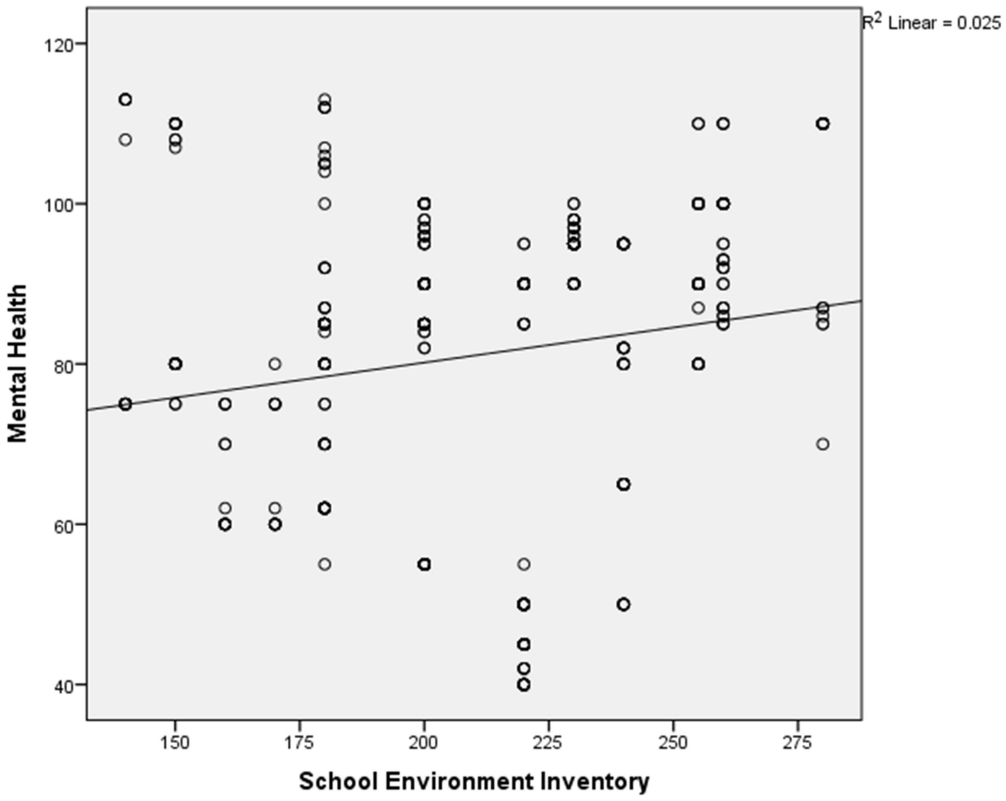

आरेख क्रमांक - **1** के अनुसार ट्रेंड रेखा में नीचे से ऊपर की ओर ढाल दिखायी दे रही है जो कि दो चरों के बीच सहसंबंध को सिद्ध करती है । आरेख क्रमांक **1** से प्राप्त $\mathbf{R^2 = .025}$ से यह ज्ञात होता है कि मानसिक स्वास्थ्य पर छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण का प्रभाव **2%** विचरण उत्पन्न करता है । उपरोक्त परिणाम के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक $\mathbf{H_1}$ अस्वीकार्य है ।

परिकल्पना क्रमांक $\mathbf{H_2}$ छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण का सार्थक सहसंबंध उनके मानसिक स्वास्थ्य के साथ नहीं पाया जायेगा । इस परिकल्पना के सत्यापन के लिये आंकड़ों का विश्लेषण तालिका क्रमांक **2** में दिया गया है । तालिका क्रमांक **2** में छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर

माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध गुणांक को प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका क्रमांक -2

छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'
विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण	300	.361**
मानसिक स्वास्थ्य	300	

r(df=369) 0.10 at .01 level

.01 के सार्थकता स्तर पर

तालिका क्रमांक 2 के अनुसार छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध गुणांक r= . 361 है । गणना किये गये सहसंबंध गुणांक का मान भी सारणी में दिये गये मान r(df=369) = 0.10 at .01 level से अधिक है । प्राप्त परिणामों के अनुसार छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण परीक्षण में अंकों में वृद्धि होने पर उनके मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांकों (प्रतिशत) में वृद्धि हो रही है । अतः छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण का सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध उनके शैक्षिक दुश्चिंता के साथ है । छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध को आरेख क्रमांक 2 में भी दर्शाया गया है ।

आरेख क्रमांक - **2**

छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध गुणांक का प्रकीर्ण आरेख

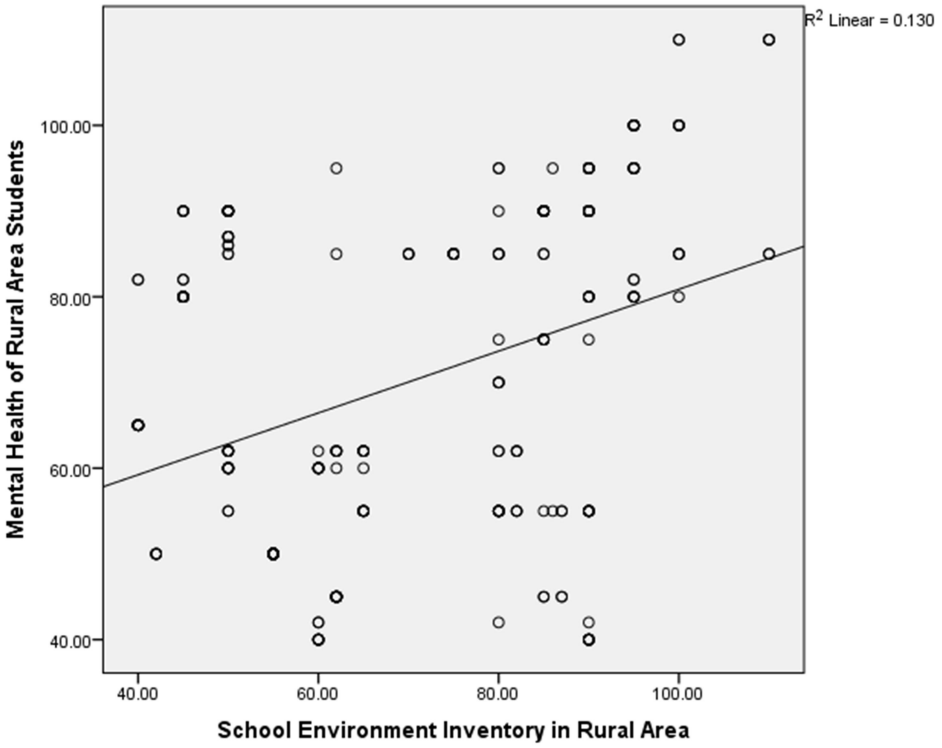

आरेख क्रमांक 2 के अनुसार ट्रेंड रेखा में नीचे से ऊपर की ओर ढाल दिखायी दे रही है जो कि दो चरों के बीच सहसंबंध को सिद्ध करती है । आरेख क्रमांक 2 से प्राप्त R^2= 0.130 से यह ज्ञात होता है कि मानसिक स्वास्थ्य पर छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर मानसिक स्वास्थ्य 13% विचरण उत्पन्न करती है । उपरोक्त परिणाम के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक H_2 अस्वीकार्य है ।

परिकल्पना क्रमांक **H_3** छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर शालेय वातावरण का सार्थक सहसंबंध उनके मानसिक स्वास्थ्य के साथ नहीं पाया जायेगा । इस परिकल्पना के सत्यापन के लिये आंकड़ों का विश्लेषण तालिका क्रमांक **3** में दिया गया है । तालिका क्रमांक **3** में छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध गुणांक को प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका क्रमांक 3

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'
विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण	300	.204**

मनसिक स्वास्थ्य	300	

r(df=369) 0.10 at .01 level

.01 के सार्थकता स्तर पर

तालिका क्रमांक 3 के अनुसार छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध गुणांक r= . 204 है । गणना किये गये सहसंबंध गुणांक का मान भी सारणी में दिये गये मान r(df=369) = 0.10 at .01 level से अधिक है । प्राप्त परिणामों के अनुसार छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण परीक्षण में अंकों में वृद्धि होने पर उनके मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांकों (प्रतिशत) में वृद्धि हो रही है । अतः छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण का सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध उनके मानसिक स्वास्थ्य के साथ है । छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शालेय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध को आरेख क्रमांक 3 में भी दर्शाया गया है ।

सुझाव -

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत है-

1- किसी भी राष्ट्र में अध्यापक निर्णायक स्थिति में होते हैं क्योंकि वे ही भावी नागरिकों का निर्माण करते हैं।

2- बालकों को अपने लक्ष्य, योग्यता, क्षमता व बालकों के रूचि के आधार पर निर्णय लेना चाहिए ना कि दूसरों का अनुसरण करना चाहिए।

3- बच्चों के अध्ययन के समय स्कूलों का वातावरण पर प्रमुखता ध्यान देना चाहिए।

4- अभिभावकों को अपने बालकों के लिए उचित समय निकालने और उन्हें उपेक्षित ना करें।

5- बच्चों के अभिभावक दूसरों के सामने अपने बच्चों की कमजोरियों के बारे में बात न करें इससे बच्चों में हिन की भावना आ जाती है।

6- प्राचार्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय या बाकी स्कूलों के एक समूह बनाकर कम से कम एक निर्देशन व परामर्श केंद्र खोला जाए, जिससे प्रशिक्षितों के द्वारा छात्र-छात्राओं को लाभ प्रदान करना चाहिए।

7- छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श केंद्र की स्थापना करने का उचित प्रयास करना है।

8- स्कूल स्तर पर यदि संभावना हो तो यथासंभव संकुल स्तर पर परामर्शदाता की नियुक्ति की जाए। इस हेतु आवश्यक है कि निर्देशन एवं परामर्श प्रशिक्षण केंद्रों में वृद्धि की जाए।

संदर्भ सूचि:-

- चैहान रीता] पाठक पी. डी. - अधिगमकर्ता एवं अधिगम प्रक्रिया] पेज नं. 76-79
- राव- एन. पापा. - अधिगमकर्ता एवं अधिगम प्रक्रिया, पेज नं. 102-103
- शिक्षण - मरिअम वेबस्टर ऑनलाइन शब्दकोश - वेबैक मशीन] पेज नं. 45-47
- यादव- सियाराम - अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया] शारदा पुस्तक सदन- इलाहाबाद] - पेज नं. 442-447
- कुमार सुनील दुश्चिन्ता (2016) – संकल्पना] कारण तथा दूर करने के उपाय
- S खिंची पूजा - उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध का अध्ययन- बियानी गर्ल्स बी. एड. कालेज, जयपुर(राजस्थान)
- भारतीय शिक्षा का इतिहास - hi-wikipedia-org@wiki@
- राव- एन. पापा. - शिक्षा के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, पेज नं.- 44,45
- षिक्षण - मरिअप वेबस्टर आॅनलाइन शब्दकोष से
- सिन्हा पवन (2015 अक्टूबर) - भारतीय आधुनिक षिक्षा, मोतिलाल नेहरू काॅलेज साउथ केम्पस दिल्ली विष्वविद्यालय,